

S. S. College, Jehanabad

Class - B.A. Part I (Hons.)

Subject - Psychology Paper-I (General Psychology)

Teacher's Name - Dr. Vineeta Nand Sharma

e-content for three days | Date: - 02.07.2021

02.07.2021 & 03.07.2021

Topic - Perception

Perception of Distance and Depth: Third Dimension
OR, Perception of Space

प्रत्यक्षीकरण का अर्थ है किसी सामग्री पर प्रतिक्रिया के द्वारा जिससे हमें उन वस्तुओं तथा व्यक्तियों का ज्ञान होता है जो हमारे सामने मौजूद होते हैं। प्रत्यक्षीकरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू दिग्गम या मनोवैज्ञानिकों के लिये (आकाश-स्थिति) दिग्गम है। यह Perception of distance and depth (दूरी एवं गहराई प्रत्यक्षीकरण) है। वास्तविकता की दृष्टि की रूपरेखा में, जो दूरी एवं गहराई की दृष्टि की लम्बाई के पहलू किमा (dimension), उसी-जैसे की दूरी किमा तथा उछाई गहराई के तीसरी किमा होते हैं। वास्तविकता की दृष्टि की दूरी की तीसरी किमा के ज्ञान को ही हमें दूरी एवं गहराई का प्रत्यक्षीकरण या (Space) प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। अर्थात् जिस सामग्री पर प्रतिक्रिया द्वारा किसी उच्चतम की दूरी, गहराई गहराई या स्थान (Space) का ज्ञान होता है, उसे ही Space perception कहा जाता है। Morgan et al. (1986) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि - "Depth perception refers to perception of the relative distances of the objects from the observer."

जब तक वस्तु की दूरी या गहराई की बात है तब मनोवैज्ञानिकों के लिए एक महत्वपूर्ण अनुसंधान विषय (ता) है। 13-सामग्री आदि के लिए प्रत्यक्षीकरण की दृष्टि से तीसरी किमा नहीं होती है। अतः मनोवैज्ञानिकों के सामने यह समस्या उत्पन्न होती गई कि द्विदिगीय-आलिप्यम के द्विदिगीय वस्तु का प्रत्यक्षीकरण कैसे होगा? यह प्रश्न यह है कि ज्ञान कैसे होता है कि वस्तु-की-वस्तु किदूरी दूरी या है या वस्तु गहराई है। इसका उत्तर समझना ही हमें है। प्रत्यक्षीकरण के द्विदिगीय पर मनोवैज्ञानिकों के दो प्रश्न हैं किदूरी या गहराई का अर्थ क्या है किदूरी का अर्थ क्या होगा निम्नलिखित हैं -

- ① एकदिगीय या मनोवैज्ञानिक संकेत
(Monocular or Psychological cues)
- ② द्विदिगीय या शारीरिक संकेत -
(Binocular or Physiological cues)

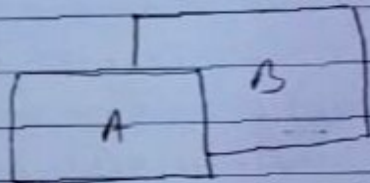
50-दली संकेतों की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार है :-

① पदोन्मुख संकेत (Monocular cue) :-

यदि किसी वस्तु में कुछ ऐसे भाग हों जिनसे हमें पता चल सके कि वह वस्तु कितनी दूर है तो उसे पदोन्मुख संकेत कहते हैं। पदोन्मुख संकेतों में शामिल वस्तु है। इसीलिए ऐसे वस्तुओं में पदोन्मुख संकेतों का होना है। इस प्रकार के संकेतों की एक विशेषता यह भी है कि व्यक्ति उसे अपने वास्तविक में ही देखता है। इसीलिए इसे मोनो-युनिक्स संकेत भी कहा जाता है। पदोन्मुख संकेत में शामिल वस्तुएं मुख्य संकेत शामिल हैं :-

(i) अंतर्स्था (Interposition or covering) :-

जब दो वस्तुएं होती हैं तो एक वस्तु दूसरी वस्तु के पीछे रहे या अंतर्स्था रूप में हो जाती है। इसी स्थिति में पीछे वाला वस्तु अंतर्स्था रूप में आता है। अंतर्स्था वस्तु अंतर्स्था रूप में आता है।



अंतर्स्था स्थिति में वस्तु A की दूरी वस्तु B की दूरी से कम है क्योंकि A वस्तु B को अंतर्स्था रूप में आता है। Cheponis et al. (1953) ने अपने अध्ययन में देखा कि वस्तु B को अंतर्स्था रूप में आने से वस्तु A की दूरी कम हो जाती है। Woodworth & Schlosberg (1946) ने भी कहा है - "In certain situations, interposition is the only dependable cue of relative distance as in the case of field artillery."

यदि वस्तुओं के आकार में अंतर (Absolute) हो तो हमें पता चलता है। इसके अतिरिक्त वास्तविक में हमें पता चलता है कि वस्तुओं के आकार में अंतर वही है।

(ii) आकार (Size) :-

आकार की परभावनाएं हमें पता चलती हैं। हमें पता चलता है कि वस्तुओं के आकार में अंतर वही है। हमें पता चलता है कि वस्तुओं के आकार में अंतर वही है।

इसी प्रकार प्रत्यक्षीकरण का एक प्रमुख संकेत है कि वस्तु वास्तव में साकार है।
 साकारता: जब वस्तु गतिशील होती है तो कतिपय ही उसकी प्रतिकृति बनी जाती है जो वास्तविक वस्तु की होती है। यह प्रतिकृति वास्तविक वस्तु के समान ही दिखती है। प्रतीक का अर्थ है कि वस्तु वास्तविक वस्तु के समान ही दिखती है।
 उदाहरण: एक वस्तु को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में ले जाने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में ले जाने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में ले जाने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में ले जाने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।

(iii) रैखीय परिदृश्य (Linear Perspective):
 रैखीय

परिदृश्य भी एक महत्वपूर्ण संकेत है जिसके द्वारा वस्तु की दूरी का ज्ञान प्राप्त होता है। जब हम किसी वस्तु को सामने देखते हैं तो उसकी दूरी कम होती है और जब हम उसे दूर से देखते हैं तो उसकी दूरी अधिक होती है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।

(iv) गतिपार (Motion Parallax):

वस्तु की गति के आधार पर भी इसी प्रकार प्रतीक वास्तविक वस्तु के संकेत होते हैं जिन्हें गति की गति (Speed of motion) तथा गति की दिशा (Direction of movement) कहते हैं।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।

वस्तु की दूरी प्रतीक वास्तविक वस्तु के संकेत होते हैं।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।
 उदाहरण: एक वस्तु को दूर से देखने पर प्रतीक वास्तविक वस्तु के समान ही दिखता है।

द्वितीय प्रत्यक्षिकरण में आयिक मदद मिलती है। लेकिन अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि यह संकेत द्वितीय प्रत्यक्षिकरण के लिए उपयुक्त संकेत नहीं है (Zegers, 1948; DeGroot et al., 1948)। यदि वास्तु-संकेत साथ ही ही है तो द्वितीय प्रत्यक्षिकरण में इस संकेत के मदद नहीं मिल सकती है। परन्तु इस संकेत के आयिक या गणितीय द्वितीय प्रत्यक्षिकरण द्वितीय संकेतों के साथ संभव होता है।

(iv) छाया (Shadow) :-

यह भी द्वितीय प्रत्यक्षिकरण

में वास्तु की छाया भी संभावित होती है। सामान्यतः जो वास्तु छाया में रहता है उसे छाया बहुत अधिक द्वितीय प्रत्यक्षिकरण को प्राप्त होता है जो वास्तु की प्रकृति में रहता है। उसे छाया संकेत कहा जाता है। इस तरह छाया भी वास्तु की प्रकृति में द्वितीय प्रत्यक्षिकरण का कारण है।

(v) वास्तुस्थिति की दृष्टि (Atmospheric Perspective) :-

वास्तुस्थिति वास्तु की द्वितीय प्रत्यक्षिकरण में वास्तुस्थिति की दृष्टि का भी कारण होता है। वास्तु की दृष्टि विपरीत की आयिक मदद है जो उच्च की दृष्टि (यदि विपरीत) पड़ता है। वास्तु प्रत्यक्षिकरण के लिए ही है, यह एक नया दृष्टि का कारण है। इस तरह वास्तु की द्वितीय प्रत्यक्षिकरण में मदद के साथ ही वास्तुस्थिति संकेत का प्रकृति में मदद होता है।

(2) द्विनेत्रीय संकेत (Binocular cues) :-

द्विनेत्रीय संकेत का मतलब

दो संकेतों के लिए दोनों आँखें अवलोकित करती हैं। इनमें एक आँख किसी वास्तु का प्रत्यक्षिकरण होता है जो उसी आँखों में ही प्रत्यक्षिकरण के द्वारा वास्तुस्थिति में रहता है। दूसरे आयिक या वास्तु की मदद से वास्तु द्वितीय प्रत्यक्षिकरण है। इसी आयिक या द्विनेत्रीय संकेतों की मदद से वास्तु प्रकृति के अध्ययन में द्विनेत्रीय संकेत का प्रकृति में मदद होता है।

(1) समवाहक प्रक्रिया (Convergence process) :-

यह भी है

वास्तु आँखों के बहुत निकट होता है तो उसी आँखों के बीच की दूरी (interocular distance) घटती है। आँखों की समवाहक प्रक्रिया (convergence) ही कारण होती है। परन्तु यदि वास्तु आँखों से दूर होता है तो आँखें दूर की दूरी (interocular distance) घटती है। समवाहक प्रक्रिया ही कारण है। Fogel et al. (1961) तथा Hochberg (1971) ने अपने अध्ययनों में बताया कि यह प्रक्रिया ही है। Convergence तथा Divergence द्वितीय

प्रत्यक्षीकरण या पद विवक्षनीय संकेत नहीं है।

(ii) प्रत्यक्ष विमर (Retinal disparity):-

इसके अलावा दोनों आँकड़ों में दो अलग-अलग परासों होती हैं। इन दोनों परासकों में कुछ विमर होती है। इसे ही प्रत्यक्षों की विमर कहाँ है। इसे Woodburne (1934) तथा Hirsch et al. (1948) के अध्ययन के बाद स्पष्ट हो गया है कि, प्रत्यक्षों की विमर एक विवक्षनीय द्वितीयक संकेत है। Harvard (1949) ने भी method of constant stimuli का उपयोग करके प्रमाणित किया कि प्रत्यक्षों की विमर का कारण दो ही कारण हैं।
असंगत चित्र

(iii) अनुकूलन (Accommodation):-

~~प्रत्यक्षीय संकेत है। इसके आँकड़ों में lens है।~~ यह पद आभिसर नभ
प्रत्यक्षीय संकेत है। इसके आँकड़ों में lens है जो अंतर होने तथा बड़ा होने का गुण संकेत देता है। दाय चंद्र तकरीबन होती है जो lens की वजन बढ़ाने के कारण lens अंतर हो जाता है जो लंबे जलु की दूरी बढ़ा देता है जो lens की वजन बढ़ा हो जाती है और lens बड़ा हो जाता है। इस प्रकार होता है कि जलु की प्रमाण आभिसरन का ही है। हीन वल के आँकड़े अंतर होना ही है। जो lens की वजन के वजन या बजन की प्रमाण हो ही अनुकूलन हो जाता है। इस प्रकार के ciliary muscles मदद होती है। ये परिवर्तन आभिसरन द्रुमाई से होती अनुकूलन होती है। इसके अलावा अनुकूलन के अलावा ही lens की वजन बढ़नी-बढ़नी के Frohman (1965) ने पद प्रमाण का यह विवक्षनीय संकेत है कि अनुकूलन संकेत ही पद कारणों प्रत्यक्षीकरण के लिए कई अनुकूलन प्रमाणों संकेत नहीं है। Hochberg (1971) ने अध्ययन में किया जो धार से हुए प्रमाणों के अध्ययनों की समीक्षा करने हुए बताया कि अनुकूलन संकेत द्वितीयक संकेत मानि 20-300 किलोमीटर के भीतर ही ही पद कारणों का ही-हारी प्रत्यक्षीकरण के गुण धर ही मदद होता है।
यह पद अनुकूलन विवक्षनीय है यह स्पष्ट है कि

द्वितीयक प्रत्यक्षीकरण अनंत प्रकाश के संकेतों का अनुकूलन होता है। इन सभी संकेतों में ही पद संकेतों की अधिक विवक्षनीय रूप ही स्पष्ट है। कोशिका का भी यह संकेतों का प्रमाण है, वह ही अनुकूलन होता है जो एक धार के आँकड़ों में ही ही प्रकाश की अंतर होता है।